भगवत् कृपा

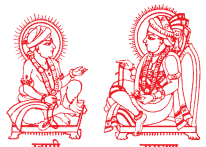

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 8 | रविवार, 26-8-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

आया-आया ! आराध्य मूर्ति का 'आराधना पर्व'

अहोहो ! हम सब के लिए अखंड सौभाग्य का दिन– **पहली सितंबर**...
समग्र गुणातीत समाज के आश्रितों की **आराध्य मूर्ति प.पू. पप्पाजी की जयंती** का महामंगलकारी दिन...
उनकी मर्जी में समग्रभाव से समर्पित होने कृतनिश्चयी होकर प्रार्थना करने का दिन...

इस वर्ष प.पू. पप्पाजी 85 वर्ष पूरे कर रहे हैं। सो, 'गुणातीत ज्योत' की बहनों ने इस आराध्य स्वरुप के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से नाम दिया है– **'आराधना पर्व'**। प्रत्यक्ष की आराधना में ही है सभी साधन की पूर्णाहुति ! प.पू.पप्पाजी यानि–हमें शाश्वत् सुख की मंजिल पर पहुँचाने वाली आर्षदृष्टा विभूति...

प.पू. पप्पाजी यानि–जीवमात्र की आंतरिक व व्यावहारिक विषम परिस्थितियों के अंधेरे को मिटा कर प्रकाश फैलाने वाले साक्षात् गुणातीत पुरुष...

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज की परम कृपा से हमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसे गुणातीत स्वरुप मिले !

गुरुहरि प.पू. पप्पाजी जैसी गुणातीत विभूति का गुणगान, चरित्रगान हम अपनी कक्षा के मुताबिक हमारी मायिक मन-बुद्धि के मूल्यांकनों से करते हैं। जबकि ऐसे स्वरुप तो नेति-नेति हैं। उनके असली स्वरुप का दर्शन तो जो स्वयं उस कक्षा पर हो वही कर सकता है। पर, इसी विचार के घेरे में हम कहीं अपनी भक्ति अदा करने का मौका गंवा ना दें यह भी तर्क का एक पहलू है...

गुरुहरि प.पू. पप्पाजी को जब से प.पू. बापा में प्रभु के स्वरुप की निष्ठा बैठी, तब से ब्र.स्व. योगीबापा को कर्ताहर्ता, प्रेरक, नियंता व हाजिर मान कर पल-पल जिए और सच्चे साधु बन गए। उन्होंने बापा का इस प्रकार से सेवन किया कि वे स्वयं तो बापा का स्वरुप बन ही चुके, इतना ही नहीं– इन्होंने अमर गुणातीत भावना में रहते साधुओं का सर्जन करा है !

बहनों के भगवान भजने-एकांतिकभाव सिद्ध कराने प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व पू. सोनाबा की त्रिपुटी ने बापा के दिव्य संकेत को निःधड़क झेला और गुणातीत समाज के मुक्तों का तन-मन-धन-आत्मा से जतन करके आज धरती पर स्वर्ग नहीं बल्कि 'अक्षरधाम' खड़ा कर दिया !

प.पू पप्पाजी ने संबंध वालों की महिमा समझ कर सेवा की... आज 85 वर्ष की आयु में भी एक विरल योगी की तरह वे अविरत वही कर रहे हैं। संबंध में आए चैतन्यों की प्रगति कराने निरंतर प्रार्थनारत हैं। प.पू. पप्पाजी की एक अनोखी विशेषता यह है कि वे हमें जाग्रत करने हमारे परम हित के लिए **हमारी किसी गल्ती पर हमें इशारा जरुर देंगे** कि तुम ऐसा करो, **पर** आग्रह कभी नहीं रखेंगे और **ना ही इस बात पर नाराज़गी जताएंगे** कि हमने उनका क्यों नहीं माना !

हमारे नए ई-मेईल एड्रेस निम्न प्रकार हैं।
अब इस एड्रेस पर ई-मेईल भेजा जाए।
मंदिर------- taddev@ydsd.org
अक्षरज्योति------- aksharjyoti@ydsd.org

इसलिए अत्यंत जाग्रत रह कर उनका इशारा हमें पकड़ना पड़ता है।

प.पू. पप्पाजी के पास कोई भी आता है, तो वे उसे कहते हैं कि मैं, काकाजी, बा और कांतिकाका यदि सुखी हुए हैं तो योगीजी महाराज के संबंध वाले मुक्तों की माहात्म्ययुक्त सेवा करने से हुए हैं। सदा सुखी होने के लिए संबंध वालों की महिमायुक्त सेवा का यह सरल रास्ता यूं कृपा करके वे बताते हैं और अग्रसर होने का बल देते हैं। सो ही प्रत्यक्ष स्वरुप के अभिप्राय की ऐसी भक्ति हम कर सकते हैं... अगर कुछ कमी है तो वह कसर हमारी है।

हे पप्पाजी ! आप गुणातीत समाज के सभी मुक्तों के आधार हो, आराध्य स्वरुप हो। आपके बल से, आपके आधार से आपके आसरे से ऐसी आराधना करते हुए हम जल्द से जल्द परम भागवत संत की भूमिका पर पहुँच कर सही अर्थ में आपका **'आराधना पर्व'** मनायें–यही आपके पुनीत चरणों में प्रार्थना...

प.पू. पप्पाजी ने वर्षों पहले 1975 में अपनी परावाणी में निम्न कथावार्ता दौरान साधुता हॉसिल करने की करामात बताई थी। इसका एक-एक शब्द खूब गहराई लिए हुए है। इनकी उन बातों से स्पष्ट दर्शन होता है कि गुरुहरि योगीजी महाराज को निहारने की प.पू. पप्पाजी की कैसी अद्‌भुत दृष्टि होगी।

✡✡✡

भगवान प्रगट और प्रत्यक्ष मिलने के बाद उन्हें भजना यानि क्या ?

श्रीजी महाराज ने कहा है– 'मुझे जो कर्ता-हर्ता मानता है, वही मेरा भजन करता है। जो नहीं मानता, वह द्रोह करता है।'

यूं प्रत्यक्ष को कर्ता-हर्ता मानना वही है उनका भजन और वही है उनका पूजन ! उनकी ओर यूं निगाह रख कर एकांतिकभाव सिद्ध करने भगवान का भजन करने लगन से-गरज से लग पड़ना चाहिए।

मायिक मूल्यांकनों की अपेक्षा अक्षरधाम के अमायिक मूल्यांकन से जीना उसे कहा जाए–दिव्य जीवन। सिर्फ ज्ञान रटने से कुछ नहीं होता।

भक्तों को जो सुख-दुःख आते हैं उसके प्रेरक भगवान स्वयं होते हैं। सभी में वे ही सब कुछ कर-करा रहे होते हैं। लेकिन यह मानना मुश्किल है। हमें दिव्यभाव हो, सो वे लाड़ लड़ाए-प्रसाद दे वगैरह करते रहते हैं। लेकिन, उन्हें सर्व कर्ताहर्ता मानने की यह बात हमें समझ में नहीं आती। यदि उनके संत का समागम करके सेवन करें, तो वह महिमा समझाए। ऐसी महिमा भक्त लोग नहीं समझ पाए थे, सो ही महाराज बार-बार रुठ कर यूं 'राधावाव' चले जाते थे। यूं बापा ने बीमारी ग्रहण करने की रीति रखी थी। ऐसा चरित्र करने पर भक्त तीव्रता से भजन करते हैं और उससे बल मिलता है व नासमझी टल जाती है-अज्ञान टलता जाता है।

बापा ने यूं अपार कसनी सह कर सारे समाज को भजन करता कर दिया ! आखिरकार बीमारी ना ग्रहण करने की हमने प्रार्थना करी, तो विमुख प्रकरण खड़ा करके भजन करने की सहज आदत डलवा दी। सो, रोज़ निज़ी तौर पर आधा घंटा भजन कर ही लेना चाहिए।

यदि प्रत्यक्ष का कर्ता-हर्तापन आनंदपूर्वक माना जाए और उनके भक्तों को ब्रह्म की मूर्ति मान कर उनकी सेवा कर ली हो तो साक्षात् की प्रसन्नता मिल जाए। पू. बापा की ऐसी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए–उनके ऐसे गुण प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन में ऐसा ब्रह्मयज्ञ शुरु कर देना चाहिए। जो मिले हैं उन्हें दिव्य और अंतर्यामी मान कर जीने का ठहराव कर लेना चाहिए।

'संबंध वाले सभी में साकार ब्रह्म नियंत्रण कर रहे हैं'– यूं मान कर फिर करना क्या ?

कोई प्रसंग बने और किसी का कुछ चुभ गया,

फलांने ऐसा किया और वैसा किया–यूं हमारे प्रकाश में आया और हमें वह चुभा या जँचा नहीं-

तब साक्षात् प्रभु ने ही यह खड़ा करा है यूं मानना। प्रभु की लीला के भाग रुप नहीं माना गया वह हमारा खुद का दोष है।

या तो हमें भजन की जरुरत है या तो सामने वाले मुक्त को भजन की जरुरत है। अंतर्दृष्टि करके भजन करेंगे तो वजह दिखाई देगी। हमारा दोष हो तो उसे टालने और सामने वाले का नज़र आए तो उसके लिए सुहृद्‌भाव से प्रार्थना करनी और उसमें हमें जो भी रोल अदा करना हो वह तटस्थ होकर अदा करें।

सामान्यतः चुभन को हम तीन प्रकार से टालने की कोशिश करते हैं।

प्रत्यक्ष को कर्ता-हर्ता मानने पर भी, किसी का कुछ चुभे, तो वह टालने के लिए हम उसकी उपेक्षा करते हैं।

मुझे कुछ लेना-देना तो है नहीं,

उसका काम ही ऐसा है–उसकी बात ही छोड़ दें,

इसमें मुझे नहीं पड़ना है–

वगैरह तर्क से हम मन में से निकाल दे वह हमारी लापरवाही कही जाए। **लीला मानी नहीं गई और प्रसंग गवां दिया !** साक्षात् प्रभु द्वारा खड़े करे प्रसंग को खुद का दोष टालने–श्रेय के लिए नहीं ले पाये और मस्ती में आ गए। वह जड़ता की मस्ती है, चैतन्य की नहीं ! हमारे लिए जरुरी ना होता, तो

प्रभु हमारे प्रकाश में लाते ही नहीं–यूं मान कर भीतर से गद्‌गद् होकर प्रार्थना करें, इसे कहते हैं–आत्मा का सुहृद्‌भाव। **यह करें तो निर्दोषबुद्धि दृढ़ हो जाए।**

किसी का चुभता टालने का दूसरा तरीका हम यह लेते हैं कि– किसी भी तरह हम खुद का बचाव कर लेंगे।
उसने ऐसा किया था और वैसा किया था इसलिए ऐसा हुआ, पर मेरी वजह से नहीं हुआ–यूं सोच करके चुभना टाल दें वह हमारा राग है।
यूं बचाव करने से शायद हमारे मन को शांति मिलेगी, लेकिन हमने आगे बढ़ने का मौका गवां दिया ! किसी को डॉटें, धमकाएं, अंटशंट बोल डालें वह भी बचाव ही है। हमारे मन का तनाव निकल जाएगा, लेकिन किसी भी तरह–जैसे-तैसे बचाव कर लेने के पीछे जो मान है, वह छोड़ना तो बाकी रहा !

चुभन टालने का सही व श्रेष्ठ उपाय यह है कि प्रसंग को यदि लीला के भाग रुप नहीं देखा गया, तो तुरंत प्रत्यक्ष प्रभु की ओर दृष्टि करनी कि हे स्वामी ! मुझे यह क्यों चुभ गया ? यूं अंतर्दृष्टि करके भजन-प्रार्थना करेंगे, तो तटस्थ हो पाएंगे और हमारी कसर दिखाई देगी कि यह डंक जो मुझे लगा, वही मेरा दोष है-मेरी कसर है। **किसी भी वजह से–छोटे-बड़े किसी ने कही किसी की बुराई कभी भी नहीं सुनना।** भजन करके यदि तटस्थ हो जाएंगे तो स्पष्ट दिखाई देगा कि– मैं मानता था कि मैं गुणातीत हो गया, लेकिन हुआ नहीं हूँ। इस वृत्ति पर चोट लगने पर मुझे चुभ तो गया–यूं अंतर्दृष्टि करके उस दोष को टालने की प्रार्थना करेंगे तो **फिर प्रभु को हमारे लिए दोबारा ऐसा प्रसंग खड़ा करना नहीं पड़ेगा।**

साधु होने की-साधुता के गुण पाने की यह साधना है। प्रसंग पर यदि परेशान हो गए, तो–
प्रभु मुझे मेरा कच्चा हिस्सा दिखा रहे हैं,
आगे मुझे जाना है,
साधु मुझे होना है,
दूसरों की झंझट में मुझे नहीं पड़ना है, उसका वह जाने,
मुझे लीला अखंड मनाती रहनी चाहिए,
नहीं मानी जाती, वही मेरा दोष है-मेरी कसर है–
इस प्रकार की जाग्रतता रख कर जीते हो जाएं...

प.पू. पप्पाजी सालों पहले यह भी कहते कि– **गुणातीत ज्ञान में जो फरियाद करने आए वही गुनहगार** ! हम किसी की शिकायत करते हैं, तो इसका अर्थ तो यही कि **हमने प्रभु का कर्ताहर्तापन व उनकी सर्वोपरि सत्ता को मान्य नहीं किया, बल्कि उस व्यक्ति को ही कर्ताहर्ता माना ना** !

तो, प.पू. पप्पाजी की यह परावाणी को झेलने की हम तत्परता रखें और इस कथावार्ता के मुताबिक वर्तने का बल, बुद्धि व प्रेरणा वे ही हमें दें ऐसी इनके चरणों में प्रार्थना !

प.पू. पप्पाजी के आराधना पर्व पर अपनी आराध्यमूर्ति को हम सभी में निहारें–वही है हमारी सच्ची आराधना !

✡✡✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है–
  बड़े संत और हमारे वर्तने में कोई फर्क नहीं है। केवल समझदारी में फर्क है। हमारी सोच, हमारा बीहेव, हमारी समझदारी हमारी प्रकृति के अधीन चलती रहती है, जबकि महामानव का हमारा समाज प्रकृतिपुरुष से परे का है, चैतन्यलक्षी है।
  हमारे लिए-हम साधकों के लिए चैतन्यलक्षी क्या ? बड़े संत प्रसन्न हों वैसा जीना है। वहां मन को, देह को ठुकरा देना है। बस प.पू. काकाजी राजी हों यही एक लक्ष्य... वो चैतन्यलक्षी !
- ग्राम्यवार्ता ना करें, एक-दूसरे की चुगली, टीका-चर्चा, दोष आदि का मनन-चिंतन ना करें। जरुरत हो उतना ही बोलें। हम सारे दिन में 90 प्रतिशत फालतू ही बोलते हैं। अगर हम अपना ही पूरे एक दिन का रिकॉर्डिंग करके सुनेंगे, तो हमें ख्याल आएगा कि हम पूरे दिन में जरुरत बिना का कितना बोले। अपने चित्त को स्थिर बनाएं !

  - प.पू. काकाजी महाराज
- धून्य के बाद प्रार्थना–संकल्प : हे सहजानंदस्वामी ! हे स्वामी ! हे श्री कृष्ण भगवान ! हे योगीबापा ! हे पप्पाजी ! हे हरिप्रसादस्वामी ! हे मुकुंदजीवनस्वामी ! हे चैतन्यस्वरुपों ! हे मुक्त मंडल ! मेरे सामने आए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मनाना ! अखंड दिव्य मनवाना ! उन्हें माथे का मुकुट मानूं ऐसा आपके बल से, आपकी कृपा से, आपके अनुग्रह से सहज दृढ़ कराना। पूरा सांस लेकर-छाती भर कर मस्तक तक-अटको भावना करो– हे बापा ! हे स्वामी ! मेरे इन्द्रियां-अंतःकरण को शुद्ध, पवित्र, शक्तिशाली बनाना। फिर धीरे-धीरे अशुद्ध प्राण को निकालना। दोबारा पूरी सांस लो, भावना करो– हे प्रभु ! मेरे जीव को सत्संगी बनाना। बलवान शुद्ध, पवित्र बनाना। सुख, शांति, आनंद देना !

  - प.पू.काकाजी महाराज
- गीता की भाषा, बाईबल, वचनामृत, स्वामी की बातें, ऐसे संतों की भाषा इटर्नल है। सौ बार पढ़ोगे, तो हर बार नए अर्थ निकलेंगे।

  - प.पू. काकाजी महाराज
- 'मैं तो गिरधर संग नाचूंगी...' यह भजन जब मैंने सुना तब उसका अर्थ मैं यह समझा था कि सिर्फ कृष्ण के साथ

नाचा करें और किसी के साथ नहीं नाचना।
पर, अब उसका अर्थ मुझे ऐसा समझ में आता है कि वो जैसा चाहे वैसे– उसकी ताल से, उसकी मर्जी के मुताबिक नाचना है। अर्थ बदला ना ? इसी तरह वचनामृत, स्वामी की बातें भी जैसे-जैसे पढ़ेंगे, जैसी-जैसी हमारी प्रगति होगी, वैसे-वैसे उसका अर्थ ऊँचा-ऊँचा उठता जाएगा।

- अगर संत की बातों को सही ढंग से-समझदारी से नहीं पकड़ेंगे तो जिंदगीभर भगवान के साथ रहते हुए भी जड़ जैसे ही रहेंगे। उसमें भगवान भी फिर कुछ नहीं कर पाएंगे।
- सत्-असत् का विवेक– (श्रीजी महाराज ने वचनामृत गढडा प्रथम-6 में सारी वेल्यूएशन्स बदल दी) गुरुहरि योगीजी महाराज बोले थे–
  गुणगान गाना–वो सत् !
  अभाव-अवगुण-अमहिमा की बातें करना–वो असत् !
  पी.एच.डी. के लड़के (विद्यार्थी) के लिए यह डेफिनेशन है।
- जीव व ब्रह्म में फर्क इतना ही है कि–
  हम हर एक में से उसके दोष–बुराई पकड़ेंगे और ब्रह्म व ब्रह्मस्वरुप संत चाहे जीव में सिर्फ एक भी अच्छाई होगी, तो वे उसे पकड़ेंगे, उसका गुणगान गाएंगे। गुरुहरि योगीजी महाराज के पास कोई भी आता तो वे तुरंत कहते–महाराज के समय का मुक्त है... गुणातीतानंदस्वामी के समय का मुक्त है, अक्षरधाम का मुक्त है। उन्होंने कभी किसी का दोष या पात्रता-कुपात्रता तक नहीं देखी...
- हमें प्रभु ने संत का संबंध देकर अत्यधिक सुख दे दिया है, पर हम फिर भी दुःखी होने का रास्ता ढूंढते रहते हैं। यानि– सत्संग में दूसरों के दोष देखते रहते हैं। जहां हम रहते हैं वहां साथी मुक्तों के स्वभाव-प्रकृति-त्रुटियाँ देखते रहेंगे, तो हमेशा दुःखी रहा करेंगे।
- स्वामिनारायण भगवान ने मुफ्त में सूर्य का प्रकाश दिया। यानि–सूर्य समान संत पृथ्वी पर अखंडित रख दिए। प.पू. काकाजी जेतलपुर की वेश्या का उदाहरण देकर हमें यह समझाना चाहते हैं कि जब मानवस्वरुप में प्रभु या प्रभु को अखंड रखी हुई विभूति के संबंध में हम आ गए हैं, फिर गुण का कोई मेल नहीं रहता। चाहे हम कितने ही अधर्मी-पतित भी क्यों ना हों ? पर, जैसे सूर्य बिना कोई फर्क रखे हर एक को बराबर एक समान प्रकाश देता है, वैसे ही सूर्य समान गुणातीत संत को गुण-दोष की कोई गिनती नहीं होती। श्रीजी महाराज ने कहा था न कि जितना अधिकार मुक्तानंदस्वामी को उतना ही मोक्ष का अधिकार जेतलपुर की वेश्या का !

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 22.8.01,	बुधवार	–	गणेश चतुर्थी
(2)	दि. 29.8.01,	बुधवार	–	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(3)	दि. 30.8.01,	गुरुवार	–	वामनजयंती
(4)	दि. 1.9.01,	शनिवार	–	प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी महाराज का प्रागट्य दिन, अनंत चतुर्दशी–गणेशविर्सजन
(5)	दि. 6.9.01,	गुरुवार	–	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज–श्राद्ध तिथि
(6)	दि. 12.9.01,	बुधवार	–	श्रीजी महाराज–श्राद्ध तिथि
(7)	दि. 13.9.01,	गुरुवार	–	एकादशी, ब्र.स्व. योगीजी महाराज–श्राद्ध तिथि
(8)	दि. 14.9.01,	शुक्रवार	–	ब्र.स्व. काकाजी महाराज–श्राद्ध तिथि
(9)	दि. 15.9.01,	शनिवार	–	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी और ब्र.स्व. भगतजी महाराज–श्राद्ध तिथि

To

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taddev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi